

अब कार्बन डाईऑक्साइड गैस से बनेगा ईंधन और शुद्ध होगी हवा...

ग्लोबल वार्मिंग से मिलेगी मुक्ति ग्रीन हाउस गैस बनेंगी वरदान

जी वाश्म ईंधनों को जलाने से ऊर्जा मिलती है, पर इनकी मात्रा सीमित है व भविष्य में समाप्त हो जाएंगी। यह भी कि एक तथ्य है कि इन ईंधनों के जलने से कार्बन डाई ऑक्साइड गैस निकलती है, जो ग्लोबल वार्मिंग का कारण है। लिहाजा वैज्ञानिक इस कोशिश में लगे हैं कि कार्बन डाईऑक्साइड को फिर से ईंधन में तब्दील कर दिया जाए, ताकि ईंधन की कमी न हो और वायुमंडल में कार्बन डाईऑक्साइड की मात्रा भी न बढ़े।

मिली बड़ी कामयाबी...

**स्विटजरलैंड के छात्र
मार्सेल ने किया कमाल**

कृत्रिम प्रकाश संश्लेषण के लिए कार्बन डाई ऑक्साइड को पानी में से बुलबुलों के रूप में एक उत्प्रेरक कॉपर ऑक्साइड पर से प्रवाहित किया जाता है और विद्युत धारा के रूप में ऊर्जा प्रदान की जाती है। इसमें दिक्कत यह आ रही थी कि विद्युत ऊर्जा का ज्यादा उपयोग कार्बन डाईऑक्साइड को कार्बन मोनोऑक्साइड में बदलने के बजाय पानी के अणुओं को तोड़ने में हो जाता

था। लिहाजा इस क्रिया की कार्यक्षमता बहुत कम हो जाती थी। लौसाने स्थित स्विस् फेडरल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के छात्र मार्सेल ने यह क्रिया कॉपर ऑक्साइड की पतली झिल्ली को टिन ऑक्साइड के इलेक्ट्रोड पर फैलाकर किया। इस नए उत्प्रेरक ने पहले की अपेक्षा कार्बन डाईऑक्साइड को ज्यादा आसानी से तोड़कर कार्बन मोनोऑक्साइड में बदल दिया।



ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन

82% कार्बन डाईऑक्साइड	10% मीथेन गैस	05% नाइट्रस ऑक्साइड	03% फ्लोरोकार्बन गैस
------------------------------------	----------------------------	----------------------------------	-----------------------------------

बदला जैविक पदार्थ में

पिछले साल अमरीका के ओक रिज नेशनल लेबोरेट्री के शोधकर्ताओं ने नैनो टेक्नोलॉजी के इस्तेमाल से घुलनशील कार्बन डाई ऑक्साइड गैस को एथेनॉल में बदलने में कामयाबी हासिल की। जिससे ईंधन बना सकता है, तो एक दूसरे प्रयोग में शोधकर्ताओं ने कृत्रिम प्रकाश संश्लेषण से वातावरण की कार्बन डाईऑक्साइड को जैविक पदार्थ में बदलने में सफलता हासिल की।